रमदान के दौरान मुसलमानों से की गयी खिलाफवरज़ियाँ

रमदान में रोज़ा रखना हमारी रूहों का इज़ाफा करने में हमारी मदद करने के लिए अल्लाह से एक तोहफा है। यह हमें खुद पर पाबंदी रखना सिखाता है, हमारी सेहत बेहतर बनाता है, और हमें अल्लाह का ज़्यादा शुकर् गुज़ार बनाता है।

अल्लाह हमारे लिए आसानी चाहते हैं, नाके कठिनाई हमारे मज़हब की पैरवी करने में, इसलिए उन्होंने रोज़े के निज़ाम को इस तरह से डिजाइन किया है के जो हमें अपने फराइज़ को आसानी से पूरा करने में मदद कर सकता है। रोज़ों के बारे में हमें जो भी मालूमात चाहिए, वह कुरान में है (2: 183-187)। बदकिस्मती से, दुनिया भर के मुसलमानों ने कई कठोर और अव्यवहारिक कवानीन को ईजाद करके, जिनका अल्लाह ने कभी भी हुक्म नहीं दिया, रोज़े के जौहर/निचोड की खिलाफवरज़ी की है।

रमदान के दौरान मुसलमानों से अक्सर की गए कुछ खिलाफवरज़ियाँ यहां दी गई हैं।

ज़कात को, साल में सिर्फ एक बार, रमदान में दिया जाता है

ज़कात एक वाजिब सदका है जो अल्लाह कुरान की आयत 6:141 में कहते हैं, "फसल के दिन" पर दिया जाना चाहिए। "फसल का दिन" की एक मिसाल तब होती है जब किसी शख्स को अपनी तनख्वा मिलती है।

हालांकि, कुरान में इस साफ हुक्म के बावजूद, ज़्यादातर मुसलमान, साल में सिर्फ एक बार, रमदान के महीने में अपनी ज़कात देते हैं।

अल्लाह कहते हैं कि वह ज़कात देने वालों के लिए अपनी रेहमत मुतय्यिन करते हैं (7: 156)। इसलिए, हमारी ज़कात को अल्लाह के पास मंज़ूरी मिले और उनकी रेहमत हासिल करने के लिए, अल्लाह के बताए गए तरीके में इसे देना ज़रूरी है।

हम दरजे ज़ील पर गौर करके बाकायदगी से ज़कात दिए जाने के निज़ाम में अल्लाह की हिकमत की सराहना/कदर कर सकते हैं:

1. ज़कात का हिसाब कुल आमदनी का 2.5% लगाया जाता है, मजमुइ असासे कुल संपत्ति का नहीं। मजमुइ असासे कुल संपत्ति के मुकाबले कुल आमदनी (यानी मेहसूल/टेक्स के

बाद की कुल आमदनी) पर बाकायदगी से ज़कात देने का हिसाब करना आसान है। असासे की कीमत में उतार-चढ़ाव होता है, इसलिए आपको हर साल हर असासेह की सटीक/दुरुस्त तौर से कीमत निकालनी होगी। यह काफी वक्त लेगा और गिनती में गलतियां हो सकती है। यह किसी भी इन्सान को आखरी तकसीम की रकम को कम करने के लिए असासे की कीमत को कम करने पर ललचा सकता है।

2. बाकायदगी से ज़कात देकर, दौलत लगातार फिरती रेहती है। गरीब लोगों की लगातार ज़रूरतें होती हैं, इसलिए ज़कात जो बाकायदगी से दी जाए उन्हें बार बार राहत देती है, भले ही रकम छोटी हो।

3. अगर लेनेवाला जल्द ही ज़कात के तौर पर मिली रकम या दफआत को खो देता है या इसतेमाल कर लेता है, तो उस शखस को अगले ज़कात के लिए एक साल का इंतजार करना होगा। अल्लाह का निज़ाम गेरेंटी करता है कि जिन लोगों को ज़कात की ज़रूरत है उन्हें बाकायदगी से कुछ मिलता रहे, ताके लोग इस तरह अपनी ज़रूरतों की मनसूबह बनदी कर सकें। मुताइना लेने वाले जिनहें ज़कात की ज़रूरत हो हैं माँ-बाप, रिश्तेदार, यतीम, गरीब और मुसाफिर, इस तरतीब में (2:215)।

रोज़े को शुरू करने और खत्म करने के लिए नया चाँद देखा जाना चाहिए

कई मुसलमानों का मानना है कि रमदान में रोज़े की शुरुआत और खत्म की तसदीक करने के लिए नया चाँद पहले देखा जाना चाहिए। लेकिन कुरान हमें ऐसा करने के लिए नहीं कहता है। सूरज की रौशनी या बादल से भरे फिज़ाई हालात अक्सर नए चाँद को पैदाइश के दिन दिखाई देने से रोकते हैं। इस वजह से, लाखों मुसलमान गलत दिन पर रोज़ा शुरू करते हैं या खत्म करते हैं। इस मौज़ू के बारे में एक वज़ाहत के लिए, हमारा वीडियो देखें, "रमदान में रोज़ा शुरू करने और रोज़ा खत्म करने के लिए चाँद देखने की जरूरत नहीं है।"
https://youtu.be/vqQYyjNPxy0

रोज़े तीस दिनों के लिए होने चाहिए

एक कमरी महीने की शुरुआत और खत्म किसी भी दिन के मगरिब से पहले या उसके बाद नए चाँद की पैदाइश से तय होती है। नया चाँद लगभग 2 9½ दिनों में नुमायाँ होता है जो सबब बनता है कुछ सालों में रोज़ों के 2 9 दिनों का और कुछ सालों में 30 दिनों का । फिर भी, कुछ मुसलमानों का मानना है कि आपको हर साल 30 रोज़े रखने चाहिए। इसलिए अगर

किसी साल में रोज़े उनके यहां 29 दिन के हैं, तो वह रमदान से पहले या उसके बाद महीने में एक ज़ायद दिन रोज़ा रखते हैं।

ज़ायद सलात और ताराविह नमाज़ें

अल्लाह ने सलात के तौर पर सिर्फ पांच रोज़ाना नमाज़ें कायम की हैं। मुसलमानों ने 'वितर,' 'सुन्नत,' 'नफिल' और 'तहज्जुद' जैसी ज़ायद सलात की ईजाद की। 'तहज्जुद' के मायने अल्लाह पर मुराकिबह करना है, जिसे अल्लाह बाकायदगी से करने की हौसला अफज़ाई करते हैं, न सिर्फ रमदान में। रमदान के दौरान मस्जिद में अल्लाह ने खास "तारावीह" नमाज़ें और दूसररी सरगरमियों का हुक्म नहीं दिया हैं, सिर्फ एहतेकाफ के अलावा, रमजान की आखिरी दस रातों के दौरान।

रोज़ा नमक या खजूर के साथ खोला जाना चाहिए

कई मुसलमानों का मानना है कि रोज़ा सिर्फ खजूर, जैतून, या नमक की चुटकी से खोला जा सकता है। कुछ मक्का या मदीना से खजूर को दरामद करने की हद तक जाते हैं क्योंकि उनका मानना है कि उन खजूरों की ज़्यादा मज़हबी कदर होती है। कुरान में, अल्लाह ने साफ तौर से बताया है कि उन्होंने किन चीज़ों के खाने की मुमानियत की है (5: 3, 6: 145)। इन खाने की चीज़ों के अलावा, आप अपने रोज़े को शुरू और खत्म करने के लिए आज़ादी से जो चाहें वह खा या पी सकते हैं।

मगरिब की नमाज़ पढने से पहले रोज़ा खोला जाना चाहिए

एक और गलत यकीन यह है कि रोज़ा मगरिब की नमाज़ पढने से पहले खोला जाना चाहिए। सलात और रोज़ा, दो अलाहेदह मज़हबी फराएज़ हैं। इसलिए, मगरिब की नमाज़ पढने से पहले रोज़ा खोलने की कोई ज़रूरत नहीं है। नमाज़ के पहले या बाद में आप अपना रोज़ा खोल सकते हैं।

आप थूक निगल नहीं सकते हैं, बदन पर लोशन नहीं लगा सकते हैं या टीवी नहीं देख सकते हैं

रोज़े के दौरान में कुछ भी खा या पी नहीं सकते हैं। थूक खाना या पानी नहीं है। थूक मुंह का एक कुदरती हयातयाती (प्राकृतिक जैविक) हासिल है। कई मुसलमान रोज़े की नीयत को पूरी तरह चूक जाते हैं थूक को न निगलने जैसे ईजादी कानूनों पर तवज्जोह दे कर। यह सिर्फ उन्हें और बेचैन, प्यासा और थका हुआ महसूस कराता है। अगर रोज़े का

मतलब प्यास और बेचैनी महसूस करना था, तो क्यों कुछ लोग जो रोज़ा रखते हैं, पंखों या एयर कंडीशनर का इसतेमाल करते हैं, अपने आप को राहत पहुँचाने के लिए?
इसी तरह, क्रीम, लोशन और डिओडोरेंट खाना नहीं होते हैं। उनका इसतेमाल सफाई या सेहत मकासिद के लिए किया जाता है। वह नाहीं जिल्द में जस्ब होते हैं और नाहीं आपके निज़ाम इन्हिज़ाम (पाचन तंत्र) में दाखिल होते हैं, तो आप उन्हें अपने बदन की देखभाल करने के लिए ज़रूरत के मुताबिक इस्तेमाल कर सकते हैं।

इसी तरह, रमदान में टीवी देखना रोज़े को खत्म नहीं करता है। अगर आप बाकी साल में टीवी देख सकते हैं, तो आप रमदान के दौरान टीवी देख सकते हैं। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि जो कुछ भी हम करते हैं, उसे, हमें अल्लाह को याद रखने और उनकी तरफ अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने से गाफिल नहीं करना चाहिए।

रोज़ा न रखने वाले लोगों को खुले आम खाने से रोकना

कुरान हमें सिखाता है कि मज़हब में कोई ज़बरदस्ती नहीं है (2: 256)। आज हर मुल्क में ऐसे लोग हैं जो रोज़ा नहीं रखते क्योंकि वह कुरान में बताए गए अल्लाह के इस्लाम के निज़ाम की पैरवी नहीं करते हैं। ऐसे लोग भी होंगे जो इस्लाम की पैरवी करते हैं लेकिन किसी वजह से रोज़ा नहीं रख सकते हैं। चाहे लोग रोज़ा रखें या नहीं, रमदान में दिन के दौरान खाना खाने या बेचने वालों को रोकने या सज़ा देने के लिए कवानीन कायम नहीं किए जा सकते हैं। ऐसे कवानीन मज़हबी आज़ादी के उसूल की खिलाफवरज़ी करते हैं।

रमदान में सलात, उमरा और ज़कात देना ज़्यादा मुकद्दस है

सलात और कुरान पढ़ना सभी मुसलमानों के लिए रोज़ाना की ज़रूरियात हैं, ताके वह अपनी रूहों की लगातार तरक्की करवा सकें(2: 238, 14:31, 17:78, 73:20)। खास तौर से रमदान में इन इबादतों को करने से अल्लाह की तरफ सच्ची फरमाबर्दारी नहीं दिखाता है।

उमरा कभी भी किया जा सकता है और जो भी महीने में किया जाए, यकसाँ ही दुरुस्त होता है।

इसी तरह, रमजान में खैरात देने का कोई ज्यादा फायदा नहीं है। चूंकि गरीबों की लगातार ज़रूरतें होती हैं, इसलिए अल्लाह हर बार खैरात के मुसलसल अमल की हौसला अफज़ाई करते हैं और इसके करने पर आपको हर बार नवाज़ते हैं। (2:270,

274)। बल्कि, कई घर और इदारे जिनहें ज़कात मिलती है अक्सर रमदान में दफआत के ज़्यादा मिलने की रिपोर्ट करते हैं। सब कुछ एक साथ इसतेमाल करना हमेशा मुमकिन नहीं होता है, इसलिए खाना अक्सर बर्बाद हो जाता है, और ज़ायद कपड़े और दूसरी खैरात किसी और के इसतेमाल किए जाने के बजाए जमा की जाती है।

रोज़े से बचने के लिए सफर करना

अल्लाह ने उन लोगों को इजाज़त दी है जो बीमारी या सफर की वजह से रमदान में रोज़ा नहीं रख सकते हैं, के वह अपने रोज़ों को दूसरे दिनों में पूरा कर लें (2: 184-5) । कुछ मुसलमान रोज़े से बचने के लिए जानबूझकर रमदान में सफर करके इस सहूलियत का गलत इसतेमाल करते हैं। अगर कोई शख्स रोज़ा रखने की काबिलियत रखता है लेकिन उसे रमदान में सफर करने की ज़रूरत है, तो उस शख्स की ज़िम्मेदारी है के छूटे हुए रोज़ों को बाद में पूरा करे। अल्लाह उन लोगों के इरादे को जानता है जो किसी भी वजह से रमदान के दौरान रोज़ा नहीं रख सकते हैं।

हैज़ के दौरान औरतें रोज़ा नहीं रख सकती हैं

उलमाओं ने झूठा दावा किया है कि मुसलमान औरतें अपने माहानह हैज़ के दौरान सलात या रोज़े का एहतमाम नहीं कर सकती हैं। यह झूठा ख़याल औरतों को अपनी रूहों की तरक्की/इज़ाफा करने के बराबरी के मौके से मेहरूम रखता है। कुरान में कहीं भी अल्लाह औरतों को माहानह हैज़ के दौरान किसी भी मज़हबी फराइज़ या इबादत करने से नहीं रोकते हैं। तआज्जुब की बात है कि औरतों को रमदान की 27 वीं रात (लेलत उल-क़दर या "तकदीर की रात") के दौरान अल्लाह को याद करने के लिए पूरी रात जागने की इजाज़त है। अगर वह अपने माहानह हैज़ के दौरान पूरी रात इबादत के इस अज़ीम काम में हिस्सा ले सकते हैं, तो रमदान में या किसी भी और वक्त माहानह हैज़ के दौरान रोज़ा रखने या सलात अनजाम देने की मुमानियत की क्या मंतक हर्ज़ है?

"ईद" की नमाज़ और तकरीबात

जब रमदान खत्म होता है, तो लोग रोज़ों के महीने के पूरे होने का जश्न मनाने के लिए दोस्तों और रिशतेदारों के साथ दावतें रखते हैं। कुछ इस मौके के लिए नए कपड़े बनाते हैं और रमदान के रोज़ों के खत्म होने से जुड़े खास पकवान तैयार करते हैं। ये समाजी या सकाफती तकरीबात हैं, मज़हबी ज़रूरियात नहीं।

जैसा कि पहले बताया गया है, पांच रोज़ाना नमाज़ों के अलावा कोई नमाज़ (सलात) नहीं है। इसलिए, कोई 'ईद' सलात भी नहीं है, जो एक छोटी,, जमात से पढी गयी नमाज़ है, जो रमदान खत्म होने के बाद सुबह मकामी मस्जिदों में रिवायती मुसलमान अदा करते हैं।

सिर्फ कुरान की पैरवी करनी चाहिए

यहां बतायी गयी खिलाफवरज़ियों के अलावा, दुनिया भर में, रमदान में, मुसलमानों से दूसरी खिलाफवरज़ियाँ भी हो सकती हैं। ये खिलाफवरज़ियाँ कुरान की पैरवी न करने का नतीजा है, लेकिन इसके बजाए, पैरवी करना, अटकल, अफवाह, और झूठे मज़हबी ज़राए जैसे हदीस और सुन्नत। हदीस और सुन्नत बातिल हैं जो नबी मुहम्मद की वफात के दो सौ साल बाद उनसे मनसूख की गयी हैं। नबी ने कभी भी उनका फरमान जारी नहीं किया, उन्होंने सख्ती से सिर्फ कुरान की पैरवी की, और कभी भी कुरान को छोड़कर किसी भी मज़हबी ज़राए की पैरवी करने के लिए कभी नहीं कहा।

कुरान के अलावा दूसरे ज़राए की पैरवी करके, मुसलमान मज़हब को अपने लिए मुश्किल बनाते हैं और इस के बारे में एक बहुत ही गलत तास्सुर (धारणा) पेश करते हैं जो लोगों को इसलाम पर गौर करने से हौसला शिकनी करता है। ता

रोज़ों का महीना खुद-बेहतरी में हमें कई सबक सिखाने के लिए एक ताकतवर निज़ाम है। रमदान के दौरान मुसलमानों के तकवे वाले अमल और शऊरी अच्छे बरताओ को पूरे साल जारी रखा जाना चाहिए।

मज़ीद मालूमात के लिए,
www.masjidtucson.org पर जाएं
या ईमेल info@masjidtucson.org ईमेल करें
कॉपीराइट 2018, मस्जिद टूसोन।
सारे हुकूक मेहफूज़ ।